"मत-अंधकार"

• भई गिलानि जगत विच चारि वरनि आस्रम उपाए । दसि नामि सनिआसीआ जोगी करह पथि चलाए ।

अर्थः- संसार में इतनी घृणा व्याप्त हो गई है कि लोग एक दूसरे से घृणा करने लगे हैं । चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) और चार आश्रम (ब्रह्मचारी, गृहस्थी, बानप्रस्ती, सन्यासी) उत्पन्न हुए । सन्यासी संप्रदाय में उनके संप्रदायों के दस नाम हैं ।

जंगम अते सरेवड़े दगे दिगंबरि वादि कराए । ब्रहमणि बहु परकारि करि सासत्रि वेद पुराणि लड़ाए ।

अर्थः- जैगम दो भागों में विभाजित है । धतष्ठल (विरदु) और गुरुष्ठल (गिहसठी) तथा सर्वदा जैन संप्रदाय के अनुयायी एक ही दिशा के अंबर वस्त्र पहनते हैं, अर्थात नग्न रहते हैं । वे छल - कपट करते हैं, झगड़ा करते हैं और कलह करते हैं । अब इन्हीं झगड़ों की श्रृंखला में ब्राह्मण बताता है चारों वर्णों में स्वयं को श्रेष्ठ समझने वाले ब्राह्मण उपरोक्त विवादों के अतिरिक्त अन्य संप्रदायों में भी संघर्ष उत्पन्न करते हैं । किन्तु ब्राह्मणों ने चारों वेदों, छः शास्त्रों और नारकी के बीच भी संघर्ष उत्पन्न करने के लिए अनेक प्रकार के कपटपूर्ण उपाय अपनाए हैं और गोठों को आपस में लड़ाया है । उन्होंने परस्पर विरोधी अन्य शास्त्रों का भी प्रयोग किया है, जो अज्ञानतावश संघर्ष का कारण बने हैं।

खट दरसन बहु वैरि करि नालि छतीसि पखंड रलाए । तंत मंत रासाइणा करामति कालखि लपटाए ।

अर्थः- छह दर्शनों (योगी, जोगम, सर्वदेव, संन्यासी, दरवेश, ब्राह्मण) ने अनेक चार प्रकार के वैर और शत्रुता उत्पन्न करके उन्हें आपस में मिला दिया है । विभिन्न प्रकार की राख को सिर पर मलकर उसे वश में करने की क्रिया को तंत्र कहते हैं, मंत्र विभिन्न प्रकार के जुड़े हुए छंदों का पाठ है, जिसके पाठ से मन की इच्छा पूरी होती है । रसायन रसों का दर्पण, रसों का घर, अर्थात सिक्के, पारे, तांबे, चांदी से सोना बनाने की विद्या को रसायन विद्या कहते हैं । उपरोक्त क्रिया करने से लोग अपनी चमत्कारिक शक्ति दिखाकर पूजित होते हैं ।

इकसि ते बहु रुपि करि रुपि कुरुपी घणे दिखाए । कलिजुगि अंदरि भरमि भुलाए ।9।

अर्थः- सिद्ध लोग प्रत्यक्ष बल से एक रूप से अनेक रूप बनाकर लोगों को धोखा देते हैं । ईश्वर ने जो रूप और स्वरूप दिया है, उसके विपरीत

रूप प्रत्यक्ष बल से उत्पन्न किए गए हैं । ऐसे रूप (आवेश) प्रकट रूप में आते - जाते रहते हैं । कलियुग में लोग मोह और भ्रम के कारण सत्य और ईश्वर भक्ति के मार्ग से भटक गए हैं ।

• बहु वाटी जगि चलीआ तब ही भए मुहमदि यारा । कउमि बहतरि सगि करि बहु बिधि वैर विरोध पसारा ।

अर्थः- जब इस धरती पर इस्लाम के अंतिम नेता मुहम्मद साहब हुए, उन्हें चार साथियों के रूप में दुनिया में प्रसिद्ध किया (1) अबू बकर सिद्दीकी, (2) उमर फ़ारूक़, (3) उस्मान गनी, (4) हज़रत अली इन चारों से अनेक प्रकार के चार मार्ग अर्थात रास्ते, शाखाएँ पूरे विश्व में फैलीं उस समय, जो चार दोस्त मुहम्मद साहब के मित्र बन गए थे, वे उनके साथ एकजुट होकर आगे बढ़े । बहत्तर राष्ट्र संप्रदाय बन गए, जिनमें शिया, सनी, रफी, इमाम और सफी शामिल थे । कई मायनों में, दुश्मनी और विरोध बढ़ गया ।

रोजे ईद निमाज करि करमी बदि कीआ संसारा । पीर पैकंबरि अउलीए गउसि कुतब बहु भेख सवारा ।

अर्थः- रोज़, जो फ़ारसी में दिन का नाम है, का अर्थ है दिन में खाना न खाना, तीस दिनों तक पानी न पीना और रात में या भोर से पहले भोजन करना, इस प्रकार रमज़ान का पूरा महीना इसी प्रकार करना । इस प्रकार तीस रोज़ों का नियम उनकी मान्यता में है, जिसके अनुसार ईद चाँद की कला के साथ मनाई जाती है । प्रतिदिन पाँच बार ईश्वर की प्रार्थना करने और रोज़े की रस्म निभाने और कर्मफल करने से, अर्थात् इस क्रिया से, रस्म हो गई है, अर्थात रस्म करने से, प्रेम और भक्ति के स्थान पर यह कर्म रह गया है । पूज्य गुरु, स्वर्ग से ईश्वर का संदेश लाने वाले, संत पुरुष, चमत्कार करने वाले, गाय की पुकार सुनने वाले, अर्थात मुसलमान फकीरों का विशेष

दर्जा प्राप्त, ग्रंथों का अर्थ समझाने वाले आदि अनेक प्रकार के वेश धारण किए हुए हैं, अर्थात गुरु होने का ढोंग रचा हुआ है । उन्होंने अपने झगड़ों को नहीं सुलझाया है और हिन्दू धर्म को नष्ट करने के लिए ऐसा किया है ।

ठाकुर दुआरे ढाहि के तिहि ठउडी मासीति उसारा । मारनि गऊ गरीब नो धरती उपरि पाप बिथारा ।

अर्थः- उन्होंने मंदिरों को तोड़कर उस स्थान पर मस्जिदें बना दीं, यानी निर्दयता से अत्याचार शुरू कर दिए । जैसे अयोध्या में भगवान राम की जन्मभूमि पर मस्जिद बना दी गई और मथुरा में भगवान कृष्ण की जन्मभूमि पर मस्जिद बना दी गई और हिंदू धर्म के नेताओं ने उस स्थान की स्मृति को थोड़ी दूरी पर बनाए रखा है । वे कलमा पढ़कर गायों और गरीब, बेसहारा लोगों की हत्या करने लगे । इस प्रकार, पृथ्वी पर पाप और अत्याचार की बुराई व्यापक रूप से फैल गई ।

काफरि मुलहदि इरमनी रुमी जंगी दुसमणि दारा । पापे दा वरतिआ वरतारा । 20।

अर्थः- काफिर, ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले नास्तिक, देवताओं के धर्म से अनभिज्ञ लोग आदि अपने-अपने देश के प्रति उदासीन होकर ईरान देश के निवासी, रोम देश के निवासी हो गए और आपस में दुश्मन बन गए और स्त्रियों के लिए लड़ते रहे, और स्त्रियों के लिए लड़ते रहे, अर्थात् आपस में लड़ते रहे। इस प्रकार स्त्रियों के लिए ये कुकृत्य फैलते गए।

- चारि वरनि चारि मजहबाँ जगि विच हिंदू मुसलमाणे । खुदी बखीलि तकबरी खिंचोताणि करेनि धिणाणे ।

अर्थः- तीन जातियां अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और मुसलमानों के चार संप्रदाय अर्थात शिया, सुन्नी, रफी, इमाम सफी बन गए

हैं । वे सभी स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या और अहंकार से प्रेरित होकर अपने - अपने संप्रदायों की ओर खींचने और धकेलने लगे हैं।

गंग बनारसि हिंदूआँ मका काबा मुसलमाणे । सुनति मुसलमाण दी तिलक जंञु हिंदू लोभाणे ।

अर्थः- गंगा के किनारे हरिद्वार को अपना धार्मिक स्थल बनाया और दूसरे ने बनारस को और मुसलमानों ने मक्का शहर में काबा मस्जिद बनवाई और उसे ईश्वर का घर मानकर उसकी तीर्थयात्रा करने लगे । मुस्लिम विधि के अनुसार, लिंग के गुप्तांग के अग्र भाग का मांस काटना सुन्नत कहलाता है । बचपन में ही यह संस्कार करने से व्यक्ति इस्लाम में धर्मांतरित माना जाता है, फिर उसे मुसलमान माना जाता है । हिंदू धर्म का संस्कार माथे पर तिलक लगाना है, जो चंदन, केसर या मिट्टी आदि विभिन्न प्रकार के पदार्थों से बना माना जाता है और धार्मिक परंपरा में जैजु सूत्र की डोरी का प्रयोग किया जाता है ।

राम रहीम कहाइदे इक नाम दुइ राह भुलाणे । बेद कतेब भुलाइकै मोहे लालच दुनी सैताणे ।

अर्थः- राम रहीम, दोनों नाम एक ही ईश्वर के हैं, अंतर केवल भाषा का है । ये संस्कृत में कहे गए हैं, लेकिन अज्ञानी मनुष्य यह मानकर कि रहीम मुसलमानों का है और राम हिंदुओं का है, दो राष्ट्र बनाने वाले ईश्वर के प्रेम और भक्ति के मार्ग को भूल गए हैं, लेकिन गुरु के घर में दोनों का उल्लेख है । बाइबल की चारों पुस्तकें, धार्मिक पुस्तकें (कुरान, अंजीर, तौरात, जम्बूर) इस प्रकार दोनों अपने - अपने धर्म के सिद्धांतों को भूलकर भौतिक वस्तुओं के लोभ में फँस गए । संसार के लोग शैतान बन गए, अर्थात् बुराई में आसक्त हो गए ।

सच किनारे रहि गिआ खहि मरदे बाम्हणि मउलाणे । सिरो न मिटे आवणि जाणे ।21।

अर्थः- सच्चाई, हाशिये पर छूट गई और धार्मिक नेता, ब्राह्मण और मौलाना, आपस में टकराते हुए मर रहे थे । ईर्ष्यालु तथाकथित धर्मी लोग, चाहे वे आते हैं और चले जाते हैं, चाहे वे पैदा होते हैं और आते हैं, या मर जाते हैं और चले जाते हैं, नष्ट नहीं होते हैं ।

बाझ गुर अंधेर है खहि खहि मरदे बहु बिधि लोआ । सतिगुर बाझ न बुझीऐ जिचर धरे न प्रभु अवतारा ।

अर्थः- पूर्ण गुरु के बिना अज्ञान का अंधकार रहता है और अज्ञानी लोग ईर्ष्या के कारण अनेक प्रकार से मरते हैं ।सच्चे गुरु के बिना ईश्वर का ज्ञान नहीं समझा जा सकता, अर्थात झूठे गुरु तो हर जगह मिल सकते हैं लेकिन ब्रह्मनिष्ठ गुरु मिलना दुर्लभ है क्योंकि जब तक ब्रह्मनिष्ठ, गुरु नहीं मिलता, तब तक कल्याण नहीं । जब तक स्वयं भगवान गुरु रूप में अवतरित नहीं होते, तब तक जगत का कल्याण नहीं अब गुरु ईश्वर की अपरिमेयता का दर्शन कराते हैं ।

गुर परमेसर इक है सचा साहु जगत वणजारा । चड़े सूर मिटि जाइ अंधारा ।17। (गुरदास-ज्ञान-रत्नवाली) (वारा)

अर्थः- ईश्वर पाँच छोटे - छोटे देव हैं, लेकिन जो इन देवों का भी देव है, उसे ही परमेश्वर कहते हैं । जो ईश्वर है, वही गुरु है, वही सच्चा साहूकार है। दूसरों को शिक्षा देने का व्यवसाय कर रहा है ।जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से अंधकार दूर हो जाता है, उसी प्रकार गुरु के उपदेश रूपी सूर्य के उदय होने से अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो जाता है ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"